अमर उजाला, 03 जनवरी, 2016

चंदौली amarujala.com अमर उजाला

विकलांगता को मात देकर पाई मंजिल

विश्व विकलांग दिवस आज: चुनाव आयोग ने राकेश को बनाया जनपद का आइकन

शिक्षिका बनीं संगीता

अमर उजाला ब्यूरो

चहनियां।

"मंजिल उन्हीं को मिलती है जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है" यह कहावत चहनियां क्षेत्र के मारूफपुर गांव निवासी रामअवतार यादव के ज्येष्ठ पुत्र राकेश यादव पर बिल्कुल सटीक बैठती है।राकेश यादव रोशन ऐसे विकलांगों मे से एक हैं जिन्होंने संघर्ष के बल पर सफलता की इबादत लिखी। चुनाव आयोग ने राकेश को चंदौली का दिव्यांग आइकान बनाया है।

बचपन में ही बाएं हाथ और पैर में पोलियो हो जाने के कारण राकेश के कार्य करने की शक्ति क्षीण हो गयी किन्तु दिल में कुछ बनने की और कुछ अलग करने की तमन्ना बराबर बनी रही। प्रारम्भिक शिक्षा गांव के प्राथमिक विद्यालय से प्राप्त करने के बाद उच्च शिक्षा के लिए काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

राकेश रौशन

असमर्थता जताई तो राकेश ने स्वयं कोचिंग कर अपनी शिक्षा पूरी की। बीएचयू से स्नातक की शिक्षा के बाद पत्रकारिता एवं जनसंचार मे वही से परास्नातक की शिक्षा लेकर कई राष्ट्रीय पत्रकारिता में लेख लिखे साथ ही दूरदर्शन, संपन्न भारत, सिटी चैनल, अभी तक़ टीवी न्यूज, बीएचयू बुलेटिन आदि में अपनी सेवाएं दीं। वर्तमान समय मे वाराणसी उदय नामक पत्रिका में उप संपादक और आल इंडिया रेडियो वाराणसी मे बतौर नैमित्तिक उद्घोषक पद पर कार्य कर रहे हैं। पत्रकारिता मे उत्कृष्ट योगदान के लिए वर्ष 2010 मे इंडियन एसोसिएशन आफ जर्नलिस्ट द्वारा इन्हे कम उम्र में काशी रत्न व

अपनों का भी भला नहीं कर सका रेलवे

मुगलसराय। पूर्व मध्य रेलवे इंटर कालेज में रेलकर्मचारियों और आश्रितों के विकलांग बच्चों के लिए 2005 में शुरू हुई विकलांग उन्न्यन सेवा समिति खुद विकलांगता का शिकार हो चुका है।पूर्व मध्य रेलवे मुगलसराय मंडल में जुलाई 2005 में ईस्ट सेंट्रल रेलवे इंटर कालेज परिसर में विकलांग बच्चों के लिए सेवा समिति का शुभारंभ हुआ था। जिसका उद्घाटन तत्कालीन महाप्रबंधक हाजीपुर जयप्रकाश खन्ना ने किया था। इसमें विकलांग दो रेल कर्मचारियों का ड्यूटी भी लगा दी गई थी। समिति में एक तरफ रेलवे कालेज के बच्चों के लिए कॉपी, किताब सहित स्काउट गाइड के सामानों की बिक्री भी शुरूआती दौर में हुई है। हालांकि शुरू में समिति कुछ पटरी पर जरूर आई लेकिन धीरे-धीरे पूरा व्यवस्था ही बेपटरी हो गई। आज हाल यह है कि विकलांग दिवस होने के बावजूद इस समिति पर ताला लटका रहा। नाम नहीं छापने के शर्त पर कुछ विकलांग छात्रों का कहना है कि यह समिति बस खानापूर्ति के लिए खोली गई थी। विकलांग रेल कर्मचारियों और उनके बच्चों को इसका कोई फायदा नहीं पहुंचा। वहीं दबे जुबान से कुछ रेल अधिकारी कर्मचारी भी बताते हैं कि इस समिति को ध्वस्त करने में रेल प्रशासन की भागीदारी है।

विकलांग कल्याण के लिए खोला गया था एकाउंट

पूर्व मध्य रेलवे इंटर कालेज में विकलांग बच्चों के कल्याण के लिए बनाई गई समिति के नाम एकाउंट भी खोला गया था जिसमें अभी भी एक लाख 36 हजार रुपये पड़े हैं। विश्वस्त सूत्रों की मानें तो यह एकाउंट डंप पड़ा है और इसका समिति द्वारा कोई उपयोग नहीं किया जा रहा है।

चन्दौली की अनुशंसा पर चुनाव आयोग ने राकेश को उप व्यक्ति के तनमन की विकलांगता उसकी मंजिल में बाधक नहीं बन

चंदौली। सकलडीहा बाजार निवासी दोनों पैरों से विकलांग 44 वर्षीया संगीया जायसवाल अपनी जीवटता से आज एक पूर्व माध्यमिक विद्यालय में सहायक अध्यापिका के पद कार्यरत हैं और गरीब एवं विकलांग बच्चों को निशुल्क शिक्षा भी दे रही हैं। इनका हौसला लोगों के लिए प्रेरणा का श्रोत होने के साथ परिवार के लिए संबल भी है।

संगिया जायसवाल पैदा तो एक सामान्य बालिका के रुप में हुई थी लेकिन तीन वर्ष की आयु में ही दोनों पैर पोलियोग्रस्त हो गये। जिसके कारण इनकी शारीरिक क्षमता क्षीर्ण हो गयी। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के बाद भी इनके पिता सुभाष चंद्र जायसवाल ने उनका काफी इलाज भी कराया सब कुछ बेअसर रहा। पांच भाई बहनों में सबसे बड़ी संगीया ने अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति कर दिया। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद सकलडीहा एलटी कालेज से एलटी(लाईसेंस आफ टीचिंग) की ट्रेनिंग ली और मेहनत के बल कन्या पूव माध्यमिक विद्यालय सकलडीहा में सहायक अध्यापिका के रुप में कार्यरत है। इन्होंने संगीता शिशु